तृतीय अध्याय : रसखान का रचनात्मक व्यक्तित्व

(क) परिवेश एवं प्रभाव : रसखान की रचना 'प्रेम वाटिका' में लिखा गया है[1]–

देखि गदर हित साहबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा–वंश की, ठसक छोरि रसखान।।
प्रेम निकेतन श्री बनहिं, आइ गोबर्धन धाम।
लह्यो सरन चित चाहिके, जुगल सरूप ललाम।।

यदि इन पंक्तियों के प्रकाश में हम रसखान के परिवेश रेखांकन करना चाहे तों इस प्रकार कर सकते हैं– गदर तथा दिल्ली के श्मशान बनने का समय 1555 ई0 के आस–पास का ठहरता है। क्योंकि इसी समय युगल सम्राट हुमायूँ ने दिल्ली के सूरवंशीय पठान शासकों से अपना खोया हुआ शासनाधिकार पुनः हस्तगत किया था। इस अवसर पर भयंकर नर संहार और विध्वंश होना स्वाभाविक ही था। रसखान कवि ह्रदय थे। इस तांडव रूप को देखकर कवि के कोमल ह्रदय का विरक्त हो जाना स्वाभाविक था। कवि ने जिस 'बादशाह वंश' की ठसक का त्याग किया वह वहीं पठान (सूर) वंश प्रतीत होता है। जिसके शासन का उदय शेरशाह सूरी के साथ 1528 ई0 में हुआ और अन्त इब्राहीम खाँ तथा अहमद खाँ के पारस्परिक कलह के कारण 1555 ई0 में हुआ। इस गदर के समय रसखान की आयु बीस बाइस वर्ष की रही होगी। इसके आधार पर उनका जन्म काल 1533 ई0 आस–पास ठहरता हैं। रसखान पिहानी के सैयद इब्राहिम का ही उपनाम हैं ऐसा माना जाता रहा हैं किन्तु अब अनुसंधान से यह बात मिथ्या सिद्ध हो चुकी है। 'प्रेमवाटिका' से स्वयं कवि द्वारा दिल्ली छोड़कर गोवर्धन–धाम जाने के उल्लेख से उनका जन्म स्थान एवं प्रारंभिक निवास दिल्ली अथवा उसके आस–पास ही ठहरता है।

यहॉ यह भी उल्लेखनीय है कि उन दिनों गोस्वामी विट्ठल नाथ का प्रभाव चतुर्दिक फैला हुआ था। वस्तुतः कृष्ण भक्ति धारा जो वल्लभाचार्य ने बहायी थी उसका प्रभाव केवल हिन्दुओं तक ही सीमित नहीं रहा। उसका प्रभाव

1. रसखान : प्रेम वाटिका– दोहा पृष्ठ 48

मुस्लमानों पर गहरे रूप में पड़ा रामधारी सिंह 'दिनकर' का यह कथन उल्लेखनीय है– ''इस्लाम ने जितना प्रभाव हिन्दुत्व पर डाला उससे कहीं अधिक प्रभाव हिन्दुत्व का इस्लाम पर पड़ा है।''[1]

यह हम भारत में असाम्प्रदायिकता का रूप देखें तो वह खुसरो रहीम रसखान आदि में स्पष्ट रूप परिलक्षित होता हैं। इस परिप्रेक्ष्य में ताज की यह कवित्त कितनी सार्थक प्रतीत होती है—[2]

सुनो दिलजानी, मेरे दिल की कहानी, तुम दस्त ही बिकानी बदनामी भी सहौगी।
मैं, देवपूजा ठानी मैं निवाज हूँ भुलानी, तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहौगी।।
मैं स्यामला सलोना सिरताज सिर कुल्ली दिये, तेरी नेह आग मे निदागे हो दहौगी मै, नन्द के कुमार कुरबान तॉड़ी सूरत पे तोड़ नाल प्यारे हिन्दुस्तानी ही रहौगी मै।।

ऊपर की पंक्तियो से स्पष्ट है कि कृष्ण भक्ति का जादू ताज के सिर पर चढ़कर बोल रहा है। नारद भक्ति सूत्र का यह कथन कितना व्यापक है जिसमें यह कहा गया है कि 'नास्ति तेषु रूप जाति कुतक्रि यादि भेदः[3] अर्थात् भक्ति रूप जाति, कुल–क्रिया आदि का भेद नहीं होता। वह तो प्रेम की ऐसी गंगा है– जहाँ सब कुछ धुल जाता हैं तथा शेष रह जाता हैं केवल प्रेम। यही प्रेम निष्ठा या भक्ति कहलाती है।

रसखान का प्रादुर्भाव ऐसे काल में हुआ था जब पठान वंश का पतन हो चुका था अराजकता थी। मानव जब परिस्थितियों की मार से आकुल हो जाता है तो वह परमात्माा की शरण में जाता हैं रसखान के व्यक्तित्व में भगवान के प्रति आस्था थी वह परिस्थितियों को पाकर पुष्पित और पल्लवित हो उठी भगवान कृष्ण की भक्ति का मार्ग प्रेम का मार्ग था इसमें परमात्मा एवं जगत् का वैसा अन्तर नही दिखाया गया था जैसा कि शंकर के अद्वैत में ब्रहम सत्यं जगन्मिथ्या में व्यक्त किया हैं। यहाँ तो यह बताया गया है कि सोने का बना

1. **रामधारी सिंहः संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ 355**
2. **रामधारी सिंहः संस्कृति के चार अध्याय पृष्ठ 354**
3. **नारद भक्ति सूत्र पृष्ठ 3 गीता प्रेस गोरखपुर**

हुआ आभूषण भी सोना हैं। परमात्मा से अलग जगत् का अस्तित्व क्या है यही कारण है कि रसखान को सगुण प्रेमी रूप उनके मन में समा गया था। मनुष्य के ह्रदय में राग या प्रेम विद्यमान है यही परिष्कृत होकर (Sufimate) भक्ति रूप में बदल जाता है उन्होंने कह ही दिया।

बह्म मैं ढूँढ्यो पुरानन ग्यानन वेद रिचा सुनि चौगुने चायन।
देख्यों सुन्यों कबहूँ न कितूँ वह कैसे सरूप और कैसे सुमायन।।
टेरत हेरत हारि पट्यो रसखान बतायो न लोग लुगायन।
देखौ दुरो वह कुंज कुटीर मैं बैठो पलोटत राधिका पायन।।

यहॉ रसखान ने राधा–कृष्ण की प्रेम–व्यंजना को भक्ति का आधार बनाया है। उन्हें अपने काव्य में प्रेम तत्व का रूप दिया है वही उनके काव्य की उदातता है। रसखान को 'रसखान' किसने बनाया? वह था उनका परिवेश। हम उनके परिवेश का निम्नलिखित रूप में अध्ययन कर सकते हैं–

जीवन–वृत्त

प्रेम –पंथ के धीर पथिक मध्ययुगीन कृष्ण–भक्त कवियों में अग्रगण्य सैयद इब्राहीम 'रसखान' का जीवन–वृत्त अन्यान्य किन्तु किंवदंतियों, जनश्रुतियों से तमसाच्छादित हैं। यद्यपि उनकी जन्म–मृत्यु लीला–विहार संबंधी तिथियों के निर्धारण में विद्वानों में मतैक्य नहीं हैं, तथापि अन्तः साक्ष्य एवं बहिःसाक्ष्य के आधार पर रसखान के जीवन को दृढ़तापूर्वक रेखांकित किया जा सकता है।

रसखान के जीवन की घटनाओं की प्रकाशित करने वाले बहि–साक्ष्य के रूप में साम्प्रादायिक साहित्य, वार्ता साहित्य, इतिहास ग्रंथ और आलोचनात्मक प्रबंध अधिगत है। अंतः साक्ष्य के अंतर्गत 'सुजान रसखान' 'प्रेम–वाटिका' आदि रचनाओं में उनके स्व–विषयक कथन हैं।

वस्तुतः कवि के प्रमाणिक जीवन–चरित के रेखाकंन के लिए यह आवश्यक हैं कि अंतःसाक्ष्य एंव बहि–साक्ष्य के रूप में उपलब्ध सामग्री का

1. (सं0) विद्या निवास मिश्रः रसखान रचनावली पृष्ठ 26

विश्लेषण–विवेचन और प्राप्त तथ्यों का मनन–परिशीलन करते हुए किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाए। इस दृष्टि से प्रथमतः बहिःसाक्ष्य के रूप में उपलब्ध सामग्री विवेच्य है। कवि–जीवन की खोज में वार्ता साहित्य का महत्व अक्षुण्ण हैं।

'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' के अनुसार रसखान दिल्ली में निवास करते थे और उनकी प्रीति एक साहूकार के पुत्र से थी। उनकी यह आसक्ति वैष्णव भक्तों के प्रोत्साहन से कृष्ण–भक्ति में परिवर्तित हो गई। वैष्णवों द्वारा प्रदत्त कृष्ण–चित्र लिए ये दिल्ली से ब्रज प्रदेश में पहुँचे। कृष्ण–दर्शन की लालसा में अनेक मंदिरों की खाक छानते रहे और अंनतः गोविन्द–कुण्ड में श्रीनाथ जी के मंदिरो में भक्तवत्सल भगवान श्रीकृष्ण ने इन्हें दर्शन दिए। तदुपरान्त स्वामी विट्ठलनाथ जी ने अपने मंदिर में रसखान को बुलाया और वहीं वे कृष्ण–लीला गान करते हुए गोपी–भाव की भक्ति में निष्णात हुए। वस्तुतः उक्त वार्ता में वर्णित घटनाचक्र संबंधी कुछ संकेत रसखान की रचनाओं में भी मिलते है– यथा, ' प्रेम–वाटिका' में छवि दर्शन का उल्लेख तथा 'सुजान रसखान' का लीला वर्णन।

वार्ताकार ने लिखा हैं कि रसखान पहले प्रभु–लीलाओं का दर्शन करते थे; तत्पश्चात् लीला–विपयक पद्य–रचना करतें थे। वार्ता से यह भी प्रमाणित होता हैं कि रसखान ने स्वामी विट्ठलनाथ का शिष्यत्व ग्रहण किया था और उन्हें गोपी–भाव विद्ध हुआ था।

'नव भक्तमाल' के रचयिता श्री राधाचरण गोवामी ने और 'उत्तरार्द्व भक्तमाल' में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने रसखान का नामोल्लेख भर किया हैं। भारतेन्दु जी तो इन मुसलमान भक्त कवियों के ऊपर करोड़ों हिन्दुओ को न्यौछावर तक करते हैं।

संवत् 1687 में बाबा वेणीमाधव दास विरचित 'मूल गोसाई चरित' में रसखान का उल्लेख मिलता हैं। उनके अनुसार संवत् 1634 से 36 के बीच रसखान ने 'राचरितमानस' की कथा सुनी थी।

1. **दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, वार्ता 219**
2. **पोद्दार–अभिनन्दन ग्रन्थ, भक्त कवि रसखान, पृ0 305**

कुल मिलाकर 'वार्ता साहित्य' के आधार पर रसखान की जाति मुसलमान निवास दिल्ली, वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा–काल संवत् 1640 तथा जन्म–मृत्यु–काल क्रमशः संवत् 1615 तथा संवत् 1685 ठहराया गया हैं, जो समीक्ष्य हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों में रसखान के जन्म–मृत्यु को लेकर मतैक्य नहीं है; यद्यपि इनकी दीक्षा, ब्रज प्रदेश में निवास, गोपी भाव की भक्ति और जाति को लेकर सभी की धारणा लगभग एक जैसी हैं।

'शिवसिंह सरोज' में सेंगरजी रसखान को सैयद वंशीय माना हैं और उनका जन्म 'पिहानी' में संवत् 1630 ठहराया हैं।[1]

'मिश्रबन्धु–विनोद' के अनुसार रसखान दिल्ली के पठान थें। इनका जन्म–संवत् 1615, मृत्यु–संवत् 1685 ठहराया गया हैं।[2]

'हिन्दी–साहित्य का प्रथम इतिहास' में सर जार्ज ग्रियर्सन ने इनका जन्म 1573 ई0 में पिहानी (जिला हरदोई, उ0 प्र0) में माना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'हिन्दी–साहित्य का इतिहास' ग्रंथ में रसखान को दिल्ली के शाही वंश का पठान सरदार और विट्ठलनाथ जी का पटु शिष्य बताया हैं। इनका रचना–काल संवत् 1640 के बाद माना हैं तथा 'प्रेम–वााटिका' की रचना संवत् 1671 में स्वीकारी हैं।[4]

डॉ0 रामकुमार वर्मा ने 'हिन्दी–साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' में 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' का आधार लेकर इनके लौकिक प्रेम–प्रसंग की चर्चा की हैं तथा इनका कविता–काल संवत् 1671 माना हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने इतिहास ग्रंथ–में भ्रमवश रसखान के ग्रंथ 'सुजान–रसखान' को दूसरा रसखान मान लिया हैं।

1. **शिव सिंह सरोज पृष्ठ : 439**
2. **मिश्र बन्धु – विनोद प्रथम भाग पृष्ठ 292**
3. **हिन्दी–साहित्य का प्रथम इतिहास, पृ0 107**
4. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 106**

'पोद्दार–अभिनन्दन ग्रंथ' में संकलित 'भक्त कवि रसखान' नामक अपने लेख में श्री भवानीशंकर याज्ञिक ने रसखान का जन्म संवत् 1590, ब्रजगमन सवंत् 1612, 1627 के उपरान्त वैष्णव सम्प्रदाय में दीक्षा, 1634 से 1637 तक मानस–कथा श्रवण, 1672 में 'प्रेम–वाटिका' की रचना तथा लगभग 85 वर्ष की आयु में संवत् 1675 के आस–पास रसखान की मृत्यु का उल्लेख किया हैं। उनके अनुसार ये महाकवि तुलसी के समकालीन थे और इनकी मृत्यु से 30–35 वर्ष पूर्व ही अष्ट छाप के सभी कवियों की मृत्यु हो चुकी थी।[1]

'रसखान : जीवन और कृतित्व' नामक ग्रंथ में श्री देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय ने रसखान का जन्म संवत् 1630, वैराग्य संवत् 1664, 'प्रेम–वाटिका' की रचना संवत् 1690 के आसपास ठहराई है। उक्त तिथियों की प्रामाणिकता ठहराने हेतु उन्होंने संवत् 1662–64 के ओच जहाँगीर और खुसरो के संघर्ष की ओर संकेत किया हैं।[2] ध्यातव्य हैं कि दिल्ली में गदर की चर्चा 'प्रेम–वाटिका' के एक दोहे में हुई है। किन्तु जहाँगीर और खुसरों का संधर्ष राष्ट्र–व्यापी नहीं था अतः उसे 'गदर' की संज्ञा रसखान ने नहीं दी होगी। गृह–कलह गदर नहीं हो सकता।

उक्त ग्रंथो के अतिरिक्त सैयद अमीर हसन नूरानी कृत 'हिन्दी के मुसलमान शोअरा' (उर्दू); गुरूदेव प्रसाद वर्मा कृत 'हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेमकाव्य' आदि ग्रंथो में भी उक्त घटनाओं और तिथियों का ही पिष्टपेषण हुआ हैं। गुरूदेव प्रसाद वर्मा ने इस जनश्रुति का सहारा लिया हैं कि रसखान के ह्रदय में भगवद्–विषयक रति का आविर्भाव श्रीमद्भागवत के फारसी रूपांतर के अध्ययनोपरांत हुआ होगा और गोपियों की कृष्ण के प्रति उत्कट प्रीति उन्हें वृन्दावन खींच ले गई होगी।

श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी के 'रसखान–पदावली' नामक संग्रह की भूमिका में तथा बाबू अमीरसिंह द्वारा सम्पादित 'रसखान और घनानन्द' (मनोरंजन पुस्तक माला–51) में रसखान के जीवन से संबंधित जिन किवदंतियों का उल्लेख हुआ

1. पोदृार–अभिनन्दन–ग्रन्थ, प्रधान सम्पादक वासुदेवशरण अग्रवाल, पृ0 315
2. रसखानः जीवन और कृतित्व, श्री देवेन्द्र उपाध्याय कृत पृ0 48।
3. सं0 वासुदेव शरण अग्रवाल : पोद्यार अभिनन्दन ग्रन्थ पृ0 315।

हैं, उनका आधार भी वार्ता साहित्य ही रहा हैं। ब्रह्मचारी जी ने इनके वणिक–पुत्र से प्रेम के अतिरिक्त युवावस्था में स्त्री–प्रेम की चर्चा भी की हैं। इनकी प्रेयसी अत्यंत मानवती स्त्री थी।

उससे प्रताड़ित रसखान कृष्ण–भक्ति में तल्लीन हुए। भावावेश में ये नित्य ही श्रीकृष्णचन्द्र के साथ में गौऐ चराने जाया करते थे और गोपियो की रास–क्रीड़ा के दर्शन करते थे। यहीं नहीं, स्वयं ब्रजचन्द्र भगवान श्रीकृष्ण ने रसखान की मृत्यु होने पर उनका दाह संस्कार किया था।

समग्रतः रसखान की जन्म और मृत्यु–संम्बन्धी तिथियों तथा उनके जीवन–चरित संबंधी विवरण के पक्ष में बहिःसाक्ष्य में अकाट्य तथ्यों का प्रायः अभाव हैं। अतएव उनकी रचनाओं में प्राप्त तथ्यों की खोज–बीन इस प्रसंग में उपयोगी सिद्व होगी।

अंतःसाक्ष्य की दृष्टि से 'प्रेम–वाटिका' के अंतिम दोहे तथा 'सुजान–रसखान' के कुछ पद विचारणीय होंगे।

देखि गदर, हित, साहिबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहि बादसा–बंस की, ठसक छोरि रसखान।।
प्रेम निकेतन श्रीवनहिं, आइ गोवर्धन–धाम।
लह्यो सरन चित चाहि कै, जुगल सरूप ललाम।।
तोरि मानिनी तें हियो, फोरि मोहिन मान।
प्रेम देव की छविहिं लखि, भए मियाँ रसखान।।
2 7 6 1
विधु–सागर–रस–इन्दु सुभ, बरस रसखानि।
प्रेमवाटिका रचि रूचिर, चिर हिय हरख बखानि।।
अरपी श्रीहरि चरन जुग, पदुम पराग निहार।
विखरहिं या में रसि कवर मधुकर–निकर अपार।।

1. **देखि गदर हित–साहबी, दिल्ली नगर मसान।**
   छिनहिं बादसा बंस की ठसक छीरि रसखान।। (प्रेम वाटिका – दोहा : 48)
2. **रसखान : जीवन और कृतित्व, पृ0 40**
3. **रसखान और उनका काव्य, पृ0 02**

उक्त दोहों से स्पष्ट हैं कि दिल्ली मे राज–सत्ता के लिए संघर्ष में हुए नर–संहार के कारण नगर श्मशान की भाँति वीरान हो गया और इस युद्व लिप्सा से विक्षुब्ध कवि ने शाही वंश की ठसक का परित्याग कर दिया अर्थात् शाहे वक्त से सम्बन्ध तोड़कर वे ब्रजवासी हुए तथा गोवर्धन की पार्वत्य–सुषमा को अपना प्रेम–निकेतन बनाकर राधा–कृष्ण के युगल–चरणों में प्रेमपूर्वक शरण ली। उन्होंने उस मानवती नायिका के मान का भंजन किया। उसके प्रेम–पाश से अपने ह्रदय को मुक्त कर रसिकराज के श्री चरणों में लगाया। और इस तरह भगवान श्रीकृष्ण की छवि का दर्शन कर मियाँ रसखान–रसरूप हो गए। संवत् 1672 मे 'प्रेम–वाटिका' की रचना रसिक राज वृन्दावन विहारी की चरण–शरण से उद्भूत ह्रदयगत आनंद–पारावार को अभिव्यक्ति देने हेतु की। अंत मे रसखान यह 'प्रेम–वाटिका' श्रीकृष्ण के पदपद्मों में समर्पित करते हैं, इसमें रसिक जन उसी प्रकार आनंद–विहार करते जैसे कमलों में भ्रमर।

रसखान के इस दोहे के आधार पर अधिकांश समीक्षकों और इतिहासकारों ने रसखान को शाही वंश का ठहराया हैं। श्री देवेन्द्रप्रताप उपाध्याय तथा श्री चन्द्रशेखर पाण्डेय प्रभृति विद्वान इसी मत के हैं। किन्तु यदि हम 'सुजान–रसखान' के कुछ पदों पर दृष्टिपात करें तो दूसरी ही ध्वनि निकलती हैं; यथा–[1]

देश विदेश के देंखें नरेशन रीझ की कोऊ न बूझ करैगौ।
तातैं तिन्हें तजि जानि गिर्‌यो गुन सौ गुन औगुन गाँठि परेगौ।।
बंसुरी बारो बड़ी रिझवार है । स्याम जु नैसुक ढार ढरैगो।
लाड़लो छै लवही तो अहीर को पीर हमारे हिये की हरैगो।।

इस पद से रसखान का कई राजदरबारों से परिचय प्रमाणित होता है। वे न केवल दिल्लीश्वर वरन् अन्य राजदरबारों में भी सम्बन्धित रहे। किन्तु उन्हें कोई गुणनाहक, स्नेहशील सम्राट मिला नहीं, जो उनके आप्लावित प्रेम–रस और

1. सं0 विद्यानिवास मिश्र : रसखान रचनावली पृ0 44 (पद नं0 07)।

काव्य–रस का पारखी होता। अतः लौकिक और आध्यात्मिक रीझि से आकुल, भग्न, ह्रदय, हताज रसखान रसिक–शिरोमणि श्रीकृष्ण के शरणागत हुए। कहना यह है कि इस पद से उनका दिल्लीश्वर का वंशज होना अप्रमाणित होता है। यदि वे शाही खानदान से थे तो क्यों अन्य राजदरबारों में भटकते रहे? परन्तु यह बात भी सच है कि उन्हें दरबारी संस्कृति का, राजसी वैभव का, शाही चमक–दमक का पर्याप्त ज्ञान था। यह दरबारी वैभव–विलास उनके कई पदों से प्रतिविंबित होता है–

कंचन मंदिर ऊंचे बनाइ के मानिक लाइ सदा झलकैयत।
प्रात ही तें सगरी नगरी नग मोतिन की तुलैयत।।
जद्यपि दीन प्रजान प्रजापति की प्रभुता मघवा ललचैयत।
ऐसे भये तौ कहा रसखानि जौ सांवरे ग्वार सों नेह न लैयत।।[1]

लल लसै पगिया सबके, सबके पठ कोटि सुगन्धनि भीने।
अंगनि अंग सजे सबहीं रसखानि अनेक जराव नवीने।।

इन पंक्तियों से यह साफ जाहिर है कि कंचन–मणि–माणिक्य–मोतिलयों की मालाएं, जड़ाऊ आभूषण, सुगन्धित वस्त्रों आदि की चर्चा करने वाले कवि ने राजसी सुख–भोग किया था। वह राजदरबारों, अमीर–उमरावों से अवश्य जुड़ा रहा था; परन्तु इसका यह अर्थ नहीं लिया जा सकता कि वे दिल्लीश्वर के वंशज थे। कदाचित् वे मुगल दरबार में किसी पद पर आसीन थे, जिसे उन्होंने राजवंश की पारम्परिक कलह, छीना–झपटी, गृह–युद्ध और मानवीय मूल्यों की विघटनकारी दशा को देखकर त्याग दिया। यही कारण है, अपने अचेतन में शाही वैभव से आक्रान्त कवि–मन संकट काल में प्रभु–पद की स्मृति से स्वयं को आश्वस्त करता है–

काहे को सोच करे रसखानि कहा करि हैं रबि नन्द विचारो।
ताखन जाखन राखिये माखन चाखन हारो सो राखन हारो।।

इस प्रकार बहिःसाक्ष्य और अन्तःसाक्ष्य के विश्लेषण–विवेचनोंपरांत रसखान के जीवन–वृत्त को रेखांकित किया जा सकता है।

जन्म और ब्रज–गमन

प्राप्त साक्ष्यों में रसखान की जन्म और मृत्यु सम्बन्धी तिथियां विवादास्पद हैं। अधिकांश विद्वानों में इनका जन्म–संवत् 1615 विक्रमी में एवं मृत्यु–संवत 1685 विक्रमी में मानी है।[1] ये तिथियां भ्रामक प्रतीत होती हैं। यदि रसखान का जन्म–संवत 1615 विक्रमी मान लिया जाए तो उनके ब्रज–गमन की तिथि का तालमेल उनके अन्तःसाक्ष्य से नहीं बैठ सकता। उन्होंने स्वयं 'प्रेम–वाटिका'[2] में लिखा है कि गदर या किसी विप्लव के कारण दिल्ली जब वीरान हो गई, तभी वे दिल्ली छोड़कर ब्रज में आए। ऐतिहासिक साक्ष्य[3] के आधार पर दिल्ली में गदर की स्थिति संवत 1613 में हुई थी। हुमायूं की मृत्यु और अकबर की ताजपोशी के बाद अकबर को सूरवंश और हेमू से भयानक युद्ध लड़ने पड़े थे। दिल्ली छोड़ते समय कवि की उम्र 18 से 25 वर्ष के बीच रही होगी, क्योंकि उनके काव्य में जिस राजसी वैभव और विलास का यत्किचित् वर्णन मिलता है, वह इस उम्र से पूर्व अभोग्य और अवर्णनीय है। अतः संवत् 1615 वि0 रसखान की जन्मतिथि नहीं मानी जा सकती।

अधिकतर विद्वानों ने रसखान की वय 85 वर्ष मानी है। अतः मृत्यु–सम्बन्धी उक्त तिथि संवत 1685 वि0 भी सही नहीं ठहरती क्योंकि संवत् 1615 में जन्म मानकर उनकी आयु 85 वर्ष की नहीं होती, 75 वर्ष की ही होती है। अतः उक्त दोनों तिथियां सही प्रमाणित नहीं होती।

'शिवसिंह सरोज' के आधार पर देवेन्द्र प्रताप उपाध्याय[4] ने जन्म–संवत् 1630 माना है। स्वयं सेंगरजी ने 'शिवसिंह सरोज' की भूमिका में लिखा है कि उन्होंने आने ग्रन्थ की रचना ही सुनी हुई बातों के आधार पर की है। फिर उनके द्वारा प्रणीत रसखान हुई बातों के आधार पर की है। फिर उनके द्वारा प्रणीत रसखान की जन्मतिथि कहां तक सही मानी जा सकती है ? इसके अतिरिक्त संवत् 1615 के विपक्ष में दिए गए तर्क यहां भी प्रभावी होते हैं।

1. मूल गोसाई चरित, बाबा बेणी माधव दास, मिश्र बन्धु आदि।
2. देखि गदर हित साहिनी....प्रेम–वाटिका, दोहा 48।
3. वाक्यात दारूल हुकूमत देहली, पृ0 308 से 319 तक।
4. रसखान : जीवन और कृतित्व, पृ0 48।

उपाध्याय जी द्वारा दी गई मृत्यु तिथि संवत् 1690 में रसखान की आयु 60 वर्ष ही बैठती है जबकि वे लगभग 85 वर्ष जीवित रहे, यह अधिकांश लोगों द्वारा मान्य तथ्य है। अतः श्री उपाध्याय द्वारा दी गई जन्म–मृत्यु की तिथियां अप्रामाणिक ठहरती हैं।

'प्रेम–वाटिका' में वर्णित गदर की घटना की दृष्टि में रखकर रसखान का जन्म संवत् 1590 मानना समीचीन प्रतीत होता है। संवत् 1613 वि0 के विप्लव, विध्वंसकारी अकाल और नरसंहारकारी काल में लगभग 23 वर्ष की वय में रसखान ब्रज क्षेत्र में आ गए होंगे, जिसका वर्णन उन्होंने 'प्रेम–वाटिका' में किया है। श्री भवानीशंकर याज्ञिक[1] ने अपने लेख तथा डॉ0 माजदा असद ने अपने शोध–प्रबन्ध[2] में संवत् 1590 को रसखान की जन्मतिथि माना है, और अन्यान्य तथ्यों से अपने मत की पुष्टि की है। ऐतिहासिक साक्ष्य (दिल्ली का गदर और मसान जैसी स्थिति) से भी यह मत प्रमाणित होता है जिसकी चर्चा आगे की गई है।

स्वत् 1612 या 13 के आस–पास ये दिल्ली नगर छोड़कर ब्रजधाम गए होंगे। इसीकाल में सत्ता–लिप्सा में रत मुगलों, सूरवंशियों आदि के युद्ध ने दिल्ली नगर श्मशान कर दिया था, अतः इन्होंने श्रीवन (मथुरा)[3] को प्रयाण किया होगा।

'देखि गदर हित साहिबी दिल्ली नगर मसान।[1] यहां रसखान द्वारा दिल्ली नगर को 'मसान' कहना और गदर का उल्लेख करना कतिपय विद्वानों[4] को इतिहास–संगत प्रतीत नहीं होता। अतः वे इस अन्तःसाक्ष्य को नजरंदाज करके अन्यान्य कल्पनाएं करते हैं और भ्रामक तिथियों का उल्लेख करते हैं। जबकि वस्तुस्थिति यह है कि संवत् 1612–13 के बीच राष्ट्रव्यापी विप्लव, युद्ध, अराजकता, नरसंहार के साथ ही साथ देश को भयावह दुर्भिक्ष के दिन भी देखने

1. पोद्दार–अभिनन्दन ग्रन्थ, पृ0 315।
2. डॉ0 माजदा असद : रसखान काव्य तथा भक्ति भावना, पृ0 32।
3. प्रेम–वाटिका, 48–49।
4. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, रसखान ग्रंथावली की भूमिका, पृ0 67।
5. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, मध्ययुगीन प्रेम साधना, पृ0 148।

पड़े थे। हुमायूं की मृत्यु के बाद अकबर 14 फरवरी 1556 ई0 संवत् 1613 कसे गद्दीनशीन हुए। अकबर ने अपने सिपहसालार एवं अभिरक्षक बैरम खां के बल से सूरवंश का नामोनिशान मिटाया तथा पानीपत में हेमू को पराजित किया। अतः इस काल में मुगलों ने भीषण मार–काट की। जाहिर है कि राष्ट्र–व्यापी इस युद्धोन्माद और आपा–धापी को रसखान ने गदर की संज्ञा दे दी होगी। ठीक इसी समय संवत् 1612 में दिल्ली–आगरा में भीषण अकाल भी पड़ा था। अंतिम संस्कार के लिए कफन भी उपलब्ध नहीं था। नर कंकालों और नरमुण्डों से पथ्वी पटी पड़ी थी। प्रसिद्ध इतिहासकार अब्दुल कादिर बदायूंनी ने अपनी पुस्तक 'मुनतखिवष्त्तवारीख' में दुर्भिक्ष और युद्ध पीड़ित जनता का बड़ा ही हृदय–विदारक वर्णन किया है। इस दुर्भिक्ष की चर्चा नसीरूद्दीन अहमद ने भी की है।[1] कदाचित् इसी स्थिति को रसखान ने अपने उक्त दोहों में वर्णित किया है और दिल्ली नगर को 'मसान' की संज्ञा दी है। अतः प्रमाणित होता है कि गदर

और मसान से भयभीत कवि दिल्ली दिल्ली के बादशाही वंश की शान–शौकत (ठसक) छोड़कर श्रीवन (मथुरा) संवत् 1613 में चले आए।

जन्म–स्थान एवं वंश

रसखान के जन्म–स्थान से दिल्ली और पिहानी (जिला हरदोई, उ0प्र0) को अधिक जोड़ा गया है। दिल्ली श्मशान–भूमि के रूप में देखकर रसखान मथुरा आ गये थे।[2] प्रेम–वाटिका के इस अंतःसाक्ष्य के आधार पर विद्वानों ने दिल्ली को इनका जन्म–स्थान माना है। किन्तु दिल्ली के नामोल्लेख भर से उनका जन्म–स्थान दिल्ली नहीं माना जा सकता। कोई सबल प्रमाण इस पक्ष में नहीं है। 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता' में भी रसखान को दिल्ली का रहने वाला बताया गया है। यह कहीं नहीं लिखा कि रसखान का जन्म भी दिल्ली में हुआ था। 'शिवसिंह सरोज', हिन्दी साहित्य का प्रथम इतिहास' आदि ग्रंथों से प्रमाणित होता है कि रसखान पिहानी (जिला हरदोई, उ0प्र0) में जन्में थे। ऐतिहासिक तथ्य यह भी है कि जिला हरदोई सैयदों की बस्ती है ।

शेरशाह शूरी द्वारा पीछा करने पर हुमायूं को कन्नौज के काजी सैयद अब्दुल गफूर ने आश्रय दिया था जिसके उपलक्ष्य में हुमायूं ने उसे हरदोई जिले की तहसील शाहबाद में 5000 बीघा जंगल और पांच गांव दिए। पिहानी की बस्ती के मूल में यही गांव है।[1] सैयद अब्दुल गफूर पिहानी में रहने लगे थे और कदाचित् सैयद इब्राहिम 'रसखान' इन्हीं के वंश के थे और ये दिल्ली में रहने लगे थे। पं0 विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने पिहानी को भ्रमवश पठानों की बस्ती कहा है क्योंकि सैयद पठान नहीं हो सकते और न ही पठान सैयद। सैयद और पठान मुसलमानों की चार प्रसिद्ध उपजातियों में से हैं।[1] इस तरह इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि 'रसखान' सैयद वंशीय थे और उनका जन्म पिहानी में हुआ था।

1. वाकयाते–दारूल–हुकूमत देहली, पृ0 311, 319
2. प्रेमवाटिका, 48

नाम, उपनाम तथा जाति

रसखान के नाम के सम्बन्ध में भी अनेक कपोल कल्पनाएं की गई हैं। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य[2]' में दो रसखान बताए हैं। एक सैयद इब्राहीम 'रसखान' और दूसरे 'सुजान–रसखान'। वस्तुतः यहां आचार्य जी ने भ्रमवश रसखान की रचना 'सुजान–रसखान' को ही दूसरा कवि मान लिया है। वस्तुतः 'रसखान' का असली नाम सैयद इब्राहीम था और 'रसखान' उनका उपनाम तथा खान उनकी परम्परागत उपाधि।[3]

कतिपय समीक्षकों ने भ्रमवश लिख दिया है कि 'रसखान' ने धर्म परिवर्तन कर लिया था। उनकी निम्नलिखित पंक्ति–

''प्रेम देव की छविहि लखि भये मियां रसखान।''

ने लोगों को इस उद्‌भावना के लिए प्रेरित किया है–''मियां (मुसलमान) सैयद इब्राहीम खान प्रेमदेव भगवान श्रीकष्ष्ण की छवि को देखकर 'रसखान' (हिन्दूभक्त) हो गए है। किन्तु इस प्रकार की कल्पनाएं–उद्‌भावनाएं प्रमाणहीन एवं निराधार हैं। वस्तुस्थिति यह है कि परम प्रेम (ईश्वर प्रेम) अथवा चरम भक्ति की अनुभूति के कारण साम्प्रदायिक धर्मों का उनके लिए कोई महत्व ही न रह गया। उनका प्रभु–प्रेम धर्मातीत है, धर्म से परे हैं। धर्म की संज्ञा में उसे बांधा नहीं जा सकता। वह धर्म–सम्प्रदाय के बंधनों से उन्मुक्त ऊर्ध्वगामी है। अतः यह न हिन्दू हैं और न मुसलमान मात्र ईश्वर–प्रेमी हैं, प्रभु–भक्त हैं।

1. डॉ0 माजदा असद : रसखान काव्य तथा भक्ति भावना, पृ0 34–35
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य, पृष्ठ 205।
3. डॉ0 माजदा असद रसखान : काव्य तथा भक्ति भावना, पृ0 34–35।

बचपन, शिक्षा–दीक्षा–

रसखान के जन्म–स्थान की चर्चा करते हुए कहा गया कि, कदाचित् ये सैयद अब्दुल गफूर के वंशज थे जिन्हें सम्राट हुमायूं से जागीर मिली थी। अतः कहा जा सकता है कि इनका बचपन सुख–सुविधा में बीता। इनकी विधिवतः शिक्षा का उल्लेख तो नहीं मिलता, लेकिन 'श्रीमद्‌भागवत' के फ़ारसी अनुवाद सुनने संबंधी घटना को यदि सत्य मान लिया जाए तो कहा जा सकता है कि ये फ़ारसी के जानकार रहे होंगे। हिन्दी–संस्कृत का उन्हें यथेष्ट ज्ञान था।

उनका काव्य स्वतः प्रमाण है। कदाचित् पठन–पाठन की सुविधा इन्हें घर पर ही उपलब्ध कराई गई होगी। इनके काव्य की उन्मुक्त गति और विकुंठ भावधारा से यह प्रमाणित होता है कि इनका जीवन सहज रहा तथा, अभाव की पीड़ा इन्होंने नहीं सही।

अवसान–काल

रसखान की मृष्यु संबंधी तिथियों की समीक्षा उनकी जन्म–तिथि के साथ की जा चुकी है। संवत् 1590 वि0 को उनकी जन्म तिथि मानने पर संवत् 1675–76 वि0 के आस–पास उनकी मृष्यु तिथि मानी जा सकती है। संवत् 1672 वि0 में भक्त–वत्सल भगवान् श्रीकृष्ण की माधुर्य भक्ति में आकण्ठ डूबे रसखान ने प्रभु के प्रति स्वमन का उल्लास व्यक्त करने हेतु 'प्रेम–वाटिका' की रचना[1] की। उसके कुछ वर्षों बाद ही उन्होंने इहलीला का संवरण मथुरा–वृन्दावन में किया। उनकी समाधि महावन में आज भी विद्यमान है। अपने निवास और शरणागत प्रभु की भक्ति के संबंध में उन्होंने लिखा है–

प्रेम निकेतन श्रीवनहिं आइ गोवर्धन धाम।

लह्यौ सरन चित चाहि के जुगल–सरूप ललाम।।

1. रसखान : प्रेम वाटिका , दोहा , 62, 7.6, 1

समग्रतः अंतःसाक्ष्य और बहिःसाक्ष्य के विश्लेषण–विवेचन से हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि सैयद इब्राहीम खां 'रसखान' का जन्म संवत् 1590 वि0 में पिहानी (जिला हरदोई, उ0प्र0) में हुआ था। उनका बचपन ताल्लुकेदारी माहौल में सुख से बीता। वे बाल्यावस्था में ही पिहानी से दिल्ली पहुंचे और वहां राजतंत्र से जुड़ गए। उन्होंने किशोरावस्था और यौवन के कुछ वर्ष राजसी वैभव में बिताए। संवत् 1612–13 के आसपास दिल्ली में हुए भीषण राज–विप्लव और दुर्भिक्ष के कारण दिल्ली की दुरवस्था से संत्रस्त कवि–हृदय इब्राहीम ब्रजधाम पधारे। जहां उन्होंने संवत् 1634 से 1637 वि0 के बीच रामचरितमानस का पाठ सुना और रसिक विहारी गोपिका

रमण ब्रजचन्द्र भगवान श्रीकृष्ण की माधुर्य–भक्ति में अनुरक्त हुए। यहीं यौवन की उद्दाम वासना और लौकिक प्रेम का उदात्तीकरण अलौकिक प्रेम में हुआ। उसी दिव्य–प्रेम के सहारे जीवन–यापन करते हुए संवत् 1675–76 के लगभग वे गोलोकवासी हुए।

खः रसखान की रचनाओं का परिचायात्मक मुल्यांकन

कहने के लिए हम रसखान की रचनाओं को मूलतः तीन खण्डों मे रखते हैं किन्तु इन तीन पुस्तकों सुजान रसखान, प्रेम वाटिका एवं दान लीला में प्रेम की एक ही धारा प्रवाहमान हैं, कवि की रचनाओं–सुजान–रसखान, दान लीला, प्रेमवाटिका, आदि पर दृष्टिपात करें लो विभिन्न भाव मुत्रियों– राधा कृष्ण की रूप माधुरी, मुस्कान, वंक विलोचन, मिलन– विछोह, नेत्रोपालम्भ, ब्रजप्रेम, मुरलीवादन, चीरहरण, सपत्नी भाव, रासलीला, फागलीला अलौकिक तत्व, प्रेम भक्ति आदि से प्रवाहित रसखान की काव्य–सरिता का पर्यवसान होता है उसी प्रेम सागर मे जहाँ से उसका उत्स हुआ हैं।

जायसी ने पद्मावत मे कहा है मानुस प्रेम भयऊ, वैकुंठी, नाहित काह द्वार भरि मूठी। सचमुच प्रेम वह पारस मणि है जो सांसारिक लोहे को सोने में बदल देता है। यही कारण है कि वर्डसवर्थ अपने काव्य मे एक स्थल पर कहा है कि मैं पहले फूलों रूप रंगों को देखकर मंत्र–मुग्ध हो जाता था अब ये सौन्दर्य हमारे अन्तः करण के विषय है इन्हें बिना देखे ही मुझे अपने ह्रदय में अपार आनन्द भी अनुभूति होती हैं।

रसखान के काव्य का उत्स प्रेम हैं। संस्कृति, दर्शन, आध्यात्म, सभी उसी में समायें हुए हैं। उनका प्रेम चिदाकाश तक व्याप्त हैं। उनका प्रेम ही अन्तः सौन्दर्य हैं। रसखान के प्रेमानुभूति के मूल में भक्ति है। वे प्रतीक्षातुर प्रेमी हैं। प्रेम ही उनकी यामा रूपों में प्रदर्शित करते हैं–

प्रेम हरी को स्वरूप हैं[1] त्यों हरि प्रेम स्वरूप।
एक होइ द्वै यों लसैं, ज्यों सूरज अवधूप।।
ज्ञान, ध्यान, विद्या मती, मत विश्वास, विवेक।
विना प्रेम सब धूर हैं, अगजग एक अनेक ।।
शास्त्रन् यदि पंडित भए कै मोलवी कुरान।

जुए प्रेम जान्यों नहीं, किहा कियों रसखान।।
कमल तंतु सों छीन अरू, कठिन खड्ग की धार।
अति सूधौ टेढ़ो बहुरि प्रेम पंथ अनिवार।।
दंपति सुख अरू विषय रस पूजा निष्ठा ध्यान।
इनतें परे बखानिए, शुद्व प्रेम रसखान।।
जेहि पाये वैकुंठ ऊरू, हरिहॅू की नहिं चाहि।
सोइ अलौकिक, सुद्व, सुभ, सरस, सुप्रेम कहाहि।।

जिस प्रकार सूरज और उसके प्रकाश को अलग नहीं किया जा सकता उसी प्रकार प्रेम और प्रभु को अलग नहीं किया जा सकता। ज्ञान, ध्यान, विद्या, मति, विभिन्न धार्मिक मत, विवेक सभी शास्त्र को पढ़कर पंडित हो गये तथा कुरान पढ़कर मौलवी बन गये किन्तु प्रेम के बिना इन्हें क्या मिला। प्रेम कमलतंतु से भी क्षीण है, वह तलवार की धार है बहुत सीधा है तथा कठिन भी हैं इस प्रेम पंथ का कोई विकल्प नहीं है।

1. रसखान : प्रेम वाटिका से उद्धृत (रसखान रचनावली), दोहा , 24,25,13,6,19,28

प्रेम दंपत्ति सुख से ऊपर हैं, विषय रस से किल हैं। पूजा, निष्ठा और ध्यान भी यहाँ तक नही पहुँचते जिसके पाने पर स्वर्ग एवं हरि भी विस्कृत हो जाते हैं वह अलौकिक शुद्व, शुभ, सरस तत्व प्रेम हैं। वस्तुतः प्रेम भी इस व्याख्या मे रसखान समस्त भाव जगत् समा जाता हैं जहाँ वाटिका में प्रेम का स्वरूप विवेचित हैं वहीं सुजान रसखान में प्रेम का व्यावहारिक जगत् उन्मुख हुआ हैं तथा दान लीला में प्रेम का दान मांगा गया हैं अतः हम उनके परिचयात्मक शिल्प को प्रस्तुत करते हैं।

रसखान के भाव–सौन्दर्य का उत्स संस्कृति, दर्शन अथवा आध्यात्म नहीं, कृष्ण प्रेम हैं, उनका प्रेम चिदाकाश तक व्याप्त प्राणोन्मुख अंतः सौन्दर्य जैसा प्रतीत होता हैं। यह प्रेम इन्द्रियों की आंतर अनुभुति पर आधृत हैं। रसखान मध्ययुगीन भक्त कवि हैं। उनकी गहन प्रेमानुभूति ही भक्ति के मूल में हैं। भक्ति के शास्त्रीय पक्ष से वे दूर हैं। वे प्रतीक्षातुर प्रेमी हैं प्रेम ही उनकी

काव्य–यात्रा का मूलमंत्र हैं। प्रिय के आगमन की उत्सुकता, प्रतीक्षा, मिलन–विछोह, सम्मोह–विमोह आदि अन्यान्य भाव– रश्मियों से अलंकृत है रसखान की कविता। कवि की रचनाओं– सुजान–रसखान, दानलीला, प्रेमवाटिका आदि पर दृष्टिपात करें तो विभिन्न भाव–भूमियों–राधा–कृष्ण की रूप–माधुरी, मुस्कान, बंक विलोचन, मिलन–विछोह, नेत्रोपालम्भ, ब्रज–प्रेम, मुरली वादन, चीरहरण, सपत्नी भाव, रासलीला, फागलीला अलौकिकत्व, प्रेमाभक्ति आदि– से प्रवाहित रसखान की काव्य–सरिता का पर्यवसान होता हैं उसी प्रेम सागर में जहाँ उत्स हुआ हैं।

<u>प्रेम विषयक संकल्पना</u> :

रसखान का काव्य –कर्म सायास नहीं। काव्य उनकी प्रेमानुभूति का, भावोन्वाद–भाववेश का साधन मात्र है। उनकी प्रेमाभिव्यक्ति सहज और निर्मल हैं। वस्तुतः उनका प्रेम वासना–पंक से बेदाग, निर्बन्ध, उदात्त और अनिर्वचनीय हैं। वह चित्त का संस्कार करने वाला, प्रेमी मन के अहम् का विसर्जन करने वाला, स्त्री –पुरूष की सहज प्रणयाभिव्यक्तियों का उदात्तीकृत रूप है जिसे सात्विक प्रेम की संज्ञा दी जा सकती हैं उनका प्रेम पार्थिव आलम्बन के प्रति आश्रय की वासनामूलक भावाभिव्यंजना नहीं हैं। वह वासनामुक्त शुद्ध राग अथवा शुद्ध प्रीति है। वह सहज ऐन्द्रिय सुख का अतिक्रमण करने वाला हैं। अपार्थिक आलम्बन के प्रति पार्थिव आश्रय की प्रणयानुभूतियों की उदात्त अभिव्यक्ति ही रसखान के प्रेम का बीज हैं। वस्तुतः सगुण, साकार (ब्रह्म) आलम्बन के प्रति ही पार्थिव आश्रय का रति भाव सम्भव हैं, निराकार के प्रति नहीं। यहीं कारण है सूफी सन्तों और सगुण भक्त कवियों ने अपार्थिव, निर्गुण, निराकार ब्रह्म को सगुण, साकार मानकर ही उसके प्रति प्रेम निवेदन किया है और वास्तव में यह विशुद्व प्रेम ही रहस्यमयी भक्ति हैं। यह परमात्मा के प्रति आत्मा का रति भाव हैं। अतः पार्थिव जैसा प्रतीत होते हुए अपार्थिव है।

रसखान इसी अपार्थिव प्रेम के सफल चितेरे हैं। उनके राधा–कृष्ण (आत्मा–परमात्मा) प्रेम के आलम्बन हैं। 'प्रेम वाटिका' के मालिन और माली हैं। यथा–

''प्रेम–अयनि श्री राधिका, प्रेम–बरन नंदनंद।

प्रेम–वाटिका के दोऊ, माली–मालिन–द्वन्द्व।।''[1]

प्रेम ही वह परम तत्व हैं जिसकी अनुभूति पर अन्य सारे अनुभव निःशेष हो जाते हैं और जिसके परिज्ञान पर कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता अर्थात् प्रेम, अनुभूति और बोध की चरम परिणति हैं, चरम सीमा हैं।

''जेहि बिनु जाने कछुहि नहिं, जान्यो जात विसेस।
सोइ प्रेम, जेहि जानिकै, रहि न जात कछु सेस।।''[2]

लोक में प्रेम ही प्रभु हैं। प्रेम अगम, अनुपम, अमित और जलद–गम्भीर है। वेद, पुराण आदि सम्पूर्ण साम्प्रदायिक सात्यि प्रेम के मर्म का ही व्याख्याकार है। प्रेम, ज्ञान–कर्म आदि से श्रेष्ठ हैं क्योकि प्रेम विहीन कर्म और ज्ञान निस्सार और थोथे हैं। रसखान सन्त कवियों की भांति अपने प्रेम–प्रभु की विरोधमूलक उक्तियों से रेखांकित करते हैं,

1. **प्रेम वाटिका दोहा 1**
2. **प्रेम वाटिका दोहा 18**

यथा–

'कमलतंतु सों छीन अरू, कठिन खड्ग की धार।
अति सूधो टेढ़ो बहुरि, प्रेमपंथ अनिवार।।''[1]
प्रेम हरी को रूप है, त्यों हरि प्रेम सरूप।
एक होई द्वै यों लसें, ज्यों सूरज अरूधूप।।[2]

श्रुति, पुरान, आगम, स्मृतिहि प्रेम सबहिं को सार। रसखान प्रेम को सांसारिक आकर्षणों से मुक्त मानते हैं। अपार्थिव प्रेम गुण, यौवन, रूप, धन, ऐश्वर्य, आदि के प्रति निष्काम होता है। वह प्रभु की भॉति सर्व–व्यापी तत्व हैं। जहाँ प्रेम है, वहाँ प्रभु हैं। प्रभु प्रेमाधीन है।

''बिनु गुन जोवन रूप धन, बिनु स्वारथ हित जाति।[3]
शुद्व कामना तें रहित, प्रेम सफल–रसखानि।।''
''हरि के सब आधीन पै, हरी प्रेम आधीन।''

रसखान प्रेम में द्वैत नहीं मानते। द्वैत–भाव के साथ सच्चा प्रेम नहीं हो सकता। ईश्वर और प्रेम, कृष्ण और राधा, परमात्मा और आत्मा में द्वैत की स्थिति असंकल्पित हैं। इसीलिए प्रेम परम मुक्ति हैं। प्रेम स्वयं ही अंकुर हैं, स्वयं ही भूमि, स्वयं ही सिंचन और प्रस्फुटन तथा फल हैं। सृष्टि के सृजन का मूल कारण हैं प्रेम। प्रेम ही कारण हैं, कार्य हैं, कर्ता कर्म और किया स्वयं ही प्रेम हैं। अलौकिक प्रेम प्रभूरूप हैं, इसीलिए उसकी स्थिति वैविध्यपूर्ण, अलौकिक, तथा तीत, गुणातीत और अनिर्वचनीय तथा विलक्षण हैं। रसखान ऐसे ही प्रेम–प्रभु के रसिक और भक्त हैं। इस प्रेम की फांस बड़ी विदग्धकारी हैं। इस शुल से जो बिध–मरा वही सच्चे अर्थो में जीवित उठा।

''प्रेम प्रेम सब कोउ कहैं, कठिन प्रेम की फांस।[2]
प्रेम फांस में फैसि मरै, सोई जिए सदाहि।''

1. **प्रेम वाटिका दोहा ?**
2. **प्रेम वाटिका दोहा ?**
3. **प्रेम वाटिका : दोहा – 15**
4. **वही : दोहा – 2**

भक्ति भाव

यद्यपि रसखान बल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित और आचार्य विट्ठनाथ के शिष्य थे तथापि उनकी भक्ति को किसी सम्प्रदाय विशेष से जोड़ना अथवा भक्ति की किसी विशिष्ट शास्त्रीय पद्वति का अनुगामी मानना उचित नहीं। क्योंकि रसखान मूलतः प्रेम–दीवाने हैं। प्रेम ही उनके इस लोक और परलोक का लक्ष्य हैं। वे ज्ञान, कर्म, उपासना–पूजा से भी परे मानते हैं प्रेम को।

''ज्ञान, कर्म, अरू उपासना, सब अहमिति को मूल।[1]
दृढ़ निश्चय नहिं होत–बिन, किए प्रेम अनुकूल।।
'' दंपति सुख अरू विषयरस, पूजा, निष्ठा, ध्यान।
इन तें परे वखानिए, शुद्व प्रेम रसखान ।।''[2]

वैष्णव भक्ति–पद्वति में नवधा–भक्ति को सर्वाधिक महत्व दिया गया हैं। कहना न होगा कि नवधा–भक्ति के सोपानों –श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पद–सेवा, अर्चना, बन्दना, दास्य, सख्य और आत्मनिवेदन–का निर्वाह रसखान काव्य में नहीं हुआ है। हिन्दी में महाकवि सूर ने भक्ति में माधुर्य–भाव का समावेश कर हिन्दी कवियों का मार्ग प्रशस्त किया हैं रसखान उसी के अनुगामी हैं वे इसी माधुर्य भाव के भक्त माने जा सकते हैं। उनकी मधुरा भक्ति या प्रेमा भक्ति प्रेम और माधुर्य कर रश्मियों में आलोकित हैं। माधुर्य भक्ति के तीन प्रमुख अंग–रूप वर्णन, विरह–वर्णन तथा आत्मसमर्पण–रसखान काव्य में पाये जाते है।

राधा–कृष्ण की रूप–राशि को उन्होने अत्यन्त सफलतापूर्वक रेखांकित किया हैं। कृष्ण की अन्यान्य मनोहरी छबियां 'सुजान रसखान' में अंकित हैं। बांसुरी की मधुर तान छेड़ते कृष्ण, कटाक्ष–पात करते कृष्ण, अलबेली वेश–भुषा धारण किये कृष्ण, काजल लगाये पैजनियां पहने बाल–कृष्ण आदि अनेक

1. प्रेम वाटिका – दोहा 12
2. प्रेम वाटि – दोहा 18

रूपाकृतियाँ रसखान ने अपने काव्य में समेटी हैं। कृष्ण का श्रृंगार मां जसोदा ने किया हैं। उस रूप पर गोपियां बलिहारी है और जसोदा के भाग्य की सराहना करती हैं।

''आजु गई हुती भोरही हों रसखानि रई कहि नन्द के भोनहिं।
बाको जियो जुग लाख करोर जसोमति को सुख जात कह्यौ नहिं।।
वेल लगाइ लगाइ कै अंजन भौंह बनाइ बनाइ डिठौनहिं।
डालि हमेलनि हार निहारत बारत ज्यों चुचकारत छौनहिं।।''[1]

युवा कृष्ण का रूप ब्रज बनिताओं को विभोर करने वाला है। उनकी विलक्षण रूप–राशि का देखकर मुग्ध न हो, लोक–लाज का परित्याग कर उनकी दीवानी न बन जाएं ऐसी कौन स्त्री ब्रज में है? उस सौंदर्य पर दृष्टि ठहरती नहीं, वह प्राणों का बीधने वाला सौंदर्य है। यथा–

''लोक की लाज तजी तबहीं जब देखो सखी ब्रजचन्द सलोनो।[2]
खंजन मीन सरोजन की छवि गंजन नैन लला दिनहोनो।।,
रसखानि निहारि सकेंजु सम्हारि कै कोतिय है वह रूप सुठोनो।

भौंह कमान सौं (जोहन) का सब बेधत प्राननि नन्द का छोनो।।

कृष्ण–सौन्दर्य का प्रभाव स्थायी और अमिट है। रूप के उस सम्मोहन से मुक्ति कहाँ? उन्माद छा जाता है। कुछ भी होश नहीं रहता।

''भौह भरी सुथरी अतिसै अधरानि रंगी रंग रातौ।[3]
कुण्डल लोल कपोल महाछबि कुजनि तें निकस्पो मुसिकातौ।।
रसखानि लखै मग छूटि गयो डग भूलि गई तन की सुधि सातौ।
फूटि गयो दधि का सिर भाजन टूटिगो नैननि लाज का नातौ।।

इसी तरह राधा के सौन्दर्य की अनेक छवियों उसकी भुकुटियों, नेत्र, चित, वन, शरीर का सुडौल गठन, देहयष्टि, मस्तक पर टीका आदि का मनोहर शब्दावली में यथास्थान वर्णन करने में रसखान पूर्णतः सिद्वहस्त हैं।

''श्रीपुखयों न बखान सर्क वृषभान सुता जू को रूप उजारौ।[4]
हे रसखान तू ज्ञान संभान तरैनि निहार जू रीझन हारौ।।
चारू सिंदूर को लाल रसाल लसै ब्रज का भाल टिकारौ।

1. सुजान रसखान सवैया – 10
2. वही 13
3. वही 22
4. वही 260

गोद में मानौ विराजत है घनस्याम के सारे को सारे कौ सारौ।।

माधुर्य भक्ति में विरह का महत्वपूर्ण स्थान हैं। रसखान ने विरह का मर्म–स्पर्शी वर्णन किया हैं। बसंत के आगमन पर भ्रमरों की अनुगूँज, कोयल की कूक सुनाई देने लगी है। प्रकृति पुष्पित होने लगी हैं। चारों ओ मादकता का संचार हैं किन्तु विरहणी के कृष्ण नहीं आये। कितने कठोर हैं?

''फूलत फूल सबै बन बागन बोलत भीर बसंत के आवत।[1]
कोयल की किलकार सुन सब कंत बिदेसन तें सब आवत।।
ऐसे कठोर महा रसखान जु ने कहु मोरी यें पार न पावत।
हूक सी सालत है हिय में जब बैनि कोयल कूक सुनावत।।

कृष्ण–बिछोह में मुरझाई विरहिणी की देह–बल्लरी, उसका निस्तेज यौवन, उसका कांतिहीन मुख, कृष्ण–आगमन के सन्देश पर इस प्रकार प्रफुल्लित, प्रदीप्त और विकसित हो उठा हैं, जिस प्रकार दीपक की लौ (बत्ती) उकसा देने पर सर्वत्र स्वर्णिम प्रकाश फैल जाता हैं।

''रसखान सुनाह वियोग के ताप मलीन महा दुति देह तिया की।[2]
पंकज सौ मुख गौ मुरझाय लगी लपटै बरै स्वांस हिया की।।
ऐसे में आवत कान्ह सुने हुलसै सुतनी तरकी अंगिया की।
यों जग जोति उठी तन की उकसाय देई मनौ बाती दिया की।।''

बिरह–वर्णन में रसखान ने कभी–कभी रीतिकालीन ऊहात्मक पद्वति का भी सहारा लिया है।

''बिरहा की जु आँच लगी तन में तब जाय परी जमुना जल में।[3]
बिरहानल तें जल सूखि गयों मछली बहींछौड़ि गई तल में।।
जब रेत फटी अरू पताल गई तब शेष जर्यौ धरती–तल में।
रसखान तब इहि आंच मिटै जब आय कै स्याम लगै गल में।।

1. सुजान रसखान सवैया 225
2. ''''' ''''' ''' 100
3. ''''' ''''' ''' 226

समग्रतः कहा जा सकता हैं कि रसखान काव्य में विरह–वर्णन सहज, स्वाभाविक और मार्मिक हैं। यदा कदा अतिशयोक्तिपूर्ण कथन भी हैं। वस्तुतः यह युग–युग से प्रियतम प्रभु से बिछुड़ी प्रीति–दुग्ध प्रणयाकुल आत्मा–रूप विरहिणी की व्यथा कथा है। यह व्यथा उनके पदों में ह्रदय के सम्पूर्ण आवेग से उच्छलित हैं। कवि अपने आराध्य का जन्म–जन्म से दास है। यही कारण हैं कि कवि की रूपा सवित, प्रेमासवित और तज्जन्य विरह की चरम परिणति उसके आत्मसर्पण में होती। प्रभु अनन्य हैं और कवि उनका अनन्य भक्त। उसका सारा

जीवन, जन्म–जन्मांतर का जीवन कृष्णमय हो। जड़–जंगम किसी भी रूप या योनि में उसे आराध्य का सहवास, साहचर्य मिले यहीं उसकी मनोकामना हैं और यही प्रेम हैं और यही भक्ति।

''मानुष हों तो वहीं रसखानि बसौं ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।[1]
जो पसु हौं तो कहा बसे मेरो चरों नित नन्द की धेनु भैझारन।।
पाहन हौं तो वहीं गिरि को जो धर्यों कर छव पुंरदर धारन।
जा खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिन्दी–कूल–कदम्ब की डारन।।

अपने अनन्य भक्ति–भाव के कारण ही रसखान कृष्ण–संरक्षण में स्वयं की पूर्ण निरापद अथवा तुलसी की शब्दावली में परम विश्राम की स्थिति में (पायी परम विश्राम राम समान हित नहीं कहूं।) पाते है।

''कहा करै रसखानि को कोऊ चुगल लवार।'' अथवा [2]
''काहे को सोच करै रसखानि, कहि करिहै रविनंद विचारों।''

जो परम दयालु, कृपाल भक्त वत्सल प्रभु कृष्ण सहायक है। ताखन जाखन राखियैं माखन–चाखन हारो सौ राखन कारो।'' रसखान भी अन्य कृष्ण भक्त कवियों की सिद्वान्ततः कृष्ण के निराकार निर्गुण रूप को स्वीकारतें हैं किन्तु व्यवहारतः वे सगुणोपासक हैं।

1. सुजान रसखान सवैया 11
2. सुजान रसखान – दोहा 264

भक्ति के लिए आलम्बन अनिवार्य है। सूर के शब्दों में–,

''रूप रेख गुन जाति जूगति बिनु निरालम्ब मन चकृत धावै।[1]
सब विधि अगम विचारहि ताते सूर सगुन लीला पद गावै।।''

चूँकि निराकार निरालम्ब आराध्य के प्रति मन एकाग्र नहीं हो पाता इसीलिए सूर की भांति रसखान भी प्रभु के सगुण रूप के ही परम भक्त है। जो इस सचराचर सृष्टि का कर्ता, धर्ता और संहर्ता है, जो महान, विराट और निरंजन हैं, वह भी अपने सगुण–साकार–रूप में साधारण बालकों की भांति नंद जी के घर में मिट्टी ला रहा हैं। कैसा विलक्षण प्रभु हैं।

''कहा कहूं आली कछु कहती बनै न दसा, [2]

नंदजी के अँगना में कौतुक एक देख्यौ मैं।
जगत के ठाटी महापुरूष विराटी जो निरंजन
निराटी ताहि माटी खात देखो मैं।।

कृष्ण के सगुण भक्त–कवियों ने उन्हें अन्यान्य विशिष्टताओं से रेखांकित किया हैं। ये महत्वपूर्ण विशिष्टताएं ही उनकी लीलाओं (बाल लीला, रासलीला फागलीला, कुंजलीला आदि) के रूप में गृहीत है।

रसखान ने बाललीला अर्थात् कृष्ण के बचपन की अन्यान्य झांकियाँ प्रस्तुत की हैं माटी खाना, धूल–धूसरित होना, चुराकर माखन खाना, विभिन्न प्रकार के आभूषण धारण करना, अन्यान्य प्रकार से शरारतें करना, गोपियों की तरह–तरह से सताना तथा नंद–जसोदा का प्रेम प्रदर्शित करना आदि से सम्बद्व किया व्यापार बाललीला के अन्तर्गत वर्णित हैं। यथा–

''धूरि भरे अति सोभित स्यामजू तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।[3]
खेलत खात फिरै अंगना पग पैजनी बाजति पीरि कछोटी।।

1. सं0 विद्या निवास मिश्र : रसखान रचनावली पृ0 136
2. वही 136 (में उद्धृत)
3. सुजान रसखन सवैया 18

वा छवि को रसखान विलोकत बारत काम कला–निधि कोटी।
काग के भाग बड़े सजनी हरि सौं लैगयौ माखन रोटी।।''

कृष्ण की किशोरावस्था से सम्बद्व रामलीला के दृश्य बड़ी सफलतापूर्वक रसखान ने प्रस्तुत किए हैं।

''आज भटू मुरली बट के तट नन्द के साँवरे रास रच्यौं री।[1]
नैननि सैननि बैननि सों नहिं कोऊ मनोहर भाव बच्यौ री।।
जद्यपि राखन कौं कुल–कानि सबै ब्रज–बालन प्रान पच्यौ री।
तद्यपि वा रसखानि के हाथ विकानी को अन्त लच्यौं री।।'

फाग–लीला में राधा–कृष्ण और गोपियों के फाग खेलने के सुन्दर चित्र रसखान ने उतारे है। फागुन लगते ही ब्रजमंडल में धूम सज गयी हैं। ऐसी कौन नवयुवती हैं ब्रज में जो कृष्णाकर्षण से विवश न हुई हो? सभी लोकलाज त्याग कर कृष्ण–दीवानी हो रही हैं और सुबह से शाम तक कृष्ण के साथ फाग खेलने में तल्लीन हो रहीं हैं।

''फागुन लाग्यौ सखी जब तें तब तें ब्रजमंडल धूम मच्यौ है।[2]
नारि नवेली बचै नहिं एक विसेख मरै सबै प्रेम अंच्यौ हैं।।
सांझ सकारे बही रसखानि सुरंग गुलालन खेल मच्यौ हैं।
को सजनी निलजी न भई अरू कौन भटूजिंहिं मान बच्यौ।।''

रसखान ने कृष्ण की कुंज लीला, दानलीला, चीरहरण आदि का भी मनोहारी वर्णन किया हैं। कुंज लीला की एक छवि दृष्टव्य हैं–

''रंग भर्‌यो मुसकात लला निकस्यौ कल कुंजन तें सुखदाई।[3]
मैं तवहीं निकसी धर तें तकि नैन बिसाल की चोट चलाई।।
घूमि गिरी रसखानि तवै हरिनी जिमि बान ललजै गिरिनाई।
टूटि गयौ घर का सब बन्धन टुटिगौ आरज–लाज बड़ाई।।

1. **सुजान रसखान सवैया 62**
2. **सुजान रसखान सवैया 125**
3. **सुजान रसखान सवैया 41**

उक्त वर्णन से स्पष्ट है कि रसखान व्यवहारतः कृष्ण के सगुण स्वरूप के ही चहेते थे किन्तु कृष्ण के निर्गुण, निराकार रूप को मान्यता भी वे बराबर देते रहें हैं। यही कारण हैं कि उनके अलौकिकत्व की ओर उनकी दृष्टि बराबर रही हैं। उनके कृष्ण परम ब्रह्म हैं। वे चतुरानन, शिव आदि महादेवों के बंदित महाप्रभु हैं फिर भी गोपियों के संकेतों पर नाचते है। यथा–

''संकर से सुर जाहि जपैं, चतुरानन ध्यानन धर्म बढावै।[1]
शेष, गनेस, महेस, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरंतर गावै।

जाहि अनादि अनन्त अखण्ड अभेद सुवेद बतावै।।
ताहिं अहीर की छोहरियां छछियां भरि छाछ पर नाच नचावैं।।''

सौन्दर्य–विधान

रसखान स्वच्छन्द भावधारा के कवि हैं। उनके काव्य में आवेग की बराबर सृष्टि हुई हैं। भावावेश का सहज उच्छालन, गहरी विरहानुभूति आत्माभिव्यंजक वकोक्तियां आदि अन्यान्य ऐसे महत्वपूर्ण तत्व उनकी कविता में हैं जो उन्हें सहज स्वच्छंद और भावुक कवि प्रमाणित करते हैं। उनकी कविता आत्मानुभूति का निरायास प्रतिफलन हैं। शास्त्रीय नियमों से अपरिचित रसखान ने अपने अनुभूति विधान के लिए स्वानुकूल मार्ग बनाया है। उनके विशुद्व प्रेम की अनुभूति प्रवण किन्तु अनावृत्ति अभिव्यक्ति 'सुजान रसखान' मे हुई हैं। भावों और वर्णनगत चेष्टाओं में वे प्रेम के औदात्य को कभी नष्ट नहीं होने देते भाव अथवा शिल्पगत कृत्रिमता से उनके काव्य का दूर का संबंध भी नही हैं। प्रेम और रति कामना सूचक हाव–भाव मुद्राओं और चेष्टाओं की तन्मयतापूर्ण अकृत्रिम और सजीव अभिव्यक्ति ने उनके काव्य को अत्यन्त सर्मस्पर्शी बना दिया हैः

1. सुजान रसखान सवैया 32

रसखान सौन्दर्य के सफल चितेरे है। उनका सौन्दर्य चित्रण स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति का सौन्दर्य हैं। उनका काव्य आंतर सादृश्य एवं अनुभूतिमय आत्म–स्पर्श का काव्य हैं। उनकी अनुभूति अभिधा और कभी–कभी लक्षणा के सहारे भाव–आवतों द्वारा संचारित होती हैं यद्यपि सौन्दर्य शास्त्रियों ने सौन्दर्य को गोपनशील माना हैं किन्तु रसखान और घनान्द का काव्य इसका अपवाद हैं। यहाँ कुछ भी गोपन नहीं सौन्दर्य विधायिनी कल्पनाओं युक्त भाव–चित्र इन कवियों की रचनाओं में बिखरे पड़े है। रसखान का काव्य तो स्वतः स्फूर्त काव्य है। उनकी अनुभूतियां अनिर्वचनीय आनन्द का उद्रेक करती हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने सौन्दर्य कों प्रकाम्प माना हैं। उनके अनुसार काम, प्रेम तथा सौन्दर्य परस्पर पूरक हैं। आंसू में ऐसा ही एक रूपक हैं।

'कामना सिंधु लहरता छवि पूरनिमा–सी छायी।[1]
रत्नाकर बनी निखरती मेरे शशि की परछाई।।' (आंसु–प्रसाद)

रसखान के काव्य में सौन्दर्य काम प्रेम और माधुर्य परस्पर पूरक बनकर आये हैं। कृष्ण–सौन्दर्य कामना को जन्म देता है। उस सौन्दर्य का सम्मोहन ही गोपियों के रति–भाव का बीज हैं। यही रति–भाव विशुद्व प्रेम और माधुर्य में परिवर्तित हो जाता है। और माधुर्य–प्रेम ही उनका जीवन–सर्वस्व है। रसखान की सौन्दर्य–चेतना स्थूल देह एवं मांसलता से ऊर्ध्वोन्मुख होकर आध्यात्म में प्रभु–प्रेम में पर्यवसित हो जाती हैं। उनके रसखानि (कृष्ण) का सहज सौन्दर्य उसकी बांकी चितवन और तीक्ष्ण कटाक्ष के साथ ही उसकी मंद–मंद मुस्कराहट का सम्मोहन प्रेम–दग्ध ही नहीं करता वरन् विछोह–विदग्ध मन के अंतःताप को शमित भी करता है। अंतरात्मा में रस की सृष्टि करता हैं और प्राणों को मधुर प्रेम के आर्कषण से भर देता हैं।

''गोरज विराजै भाल लहलही वन माल आगे गैया पाछै ग्वाल गावें मृदुतान री।[1]
जैसी धुनि मधुर मधुर बांसुरी की तैसी बंक चितवनि मंद–मंद मुसकान री।।

1. जयशंकर प्रसाद : ऑसू।

कदम विटप के निकट तटनी के तट अटा चढ़ि देखि पीत पट फहरान री।
रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन प्राननि निझावै यह आवै रसखानि री।।

सौन्दर्य आभ्यान्तरिक (मन की) भी होता हैं और बाह्य (आंगिक) भी रसखान के आभ्यान्तरिक सौन्दर्य के अंतर्गत उनका प्रगाढ़ कृष्ण–प्रेम और उदास भावानुभूति हैं। वे सच्चे ह्रदय से आराध्य के प्रति समर्पित हैं। वे अन्यान्य योनियों में कृष्ण साग्निध्य के अभिलाषी है।

''मानुष हों तो वही रसखान बसों ब्रज गोकुल गांव के ग्वारन।''[2]
''जो रसना रस ना बिलसैं तेहि देह सदा निज नाम उचारन।''
'खास निवास मिलै जुपै तौ वहीं कालिंदी–कूल–कदम्ब की डारन।'

रसखान का आंगिक (रूप) सौन्दर्य–विधान वैविध्यपूर्ण हैं। उन्होंने राध–कृष्ण की देह को देव–मंदिर मानकर विविध अंगों–प्रत्यंगों का रूपांकन किया हैं। परन्तु उनका रूप–वर्णन अंशतः रीतिकालीन नव–शिख–परम्परा से भी कहीं–कहीं प्रभावित प्रतीत होता हैं ; यथा–

''बागन काहे जाओ पिया घर बैठे बाग लगाय दिखाऊँ।[3]
एड़ी अनार सी मौर रही बहियाँ दोउ चंपे डार नवाऊँ।।
छातिन में रस के निबुआ अरू घूँघट खोल के दाख चखाऊँ।
टांगन के रसके चसके रति फूलनि की रसखानि लुटाऊँ।।

उक्त चित्र विरल हैं। वस्तुतः रसखान का रूप–वोध असाधरण हैं। उन्होने कृष्ण–रूप का अत्यंत सुरूचिपुर्ण वर्णन किया है। कवि ने कृष्ण की गौर–स्यापल कांति मुखमंडल नेत्र, भुकुटि–विलास, कपोल आदि और राधा की देह–यष्टि सुगठित अंगलता, वक्ष आदि से युक्त मानव–कलेवर के भव्य–सौन्दर्य की चित्रित किया हैं। कृष्ण–सौन्दर्य लोकोत्तर (दिव्य) सौन्दर्य की बड़े मनोयोग को रूपांकित किया है। कृष्ण–सौन्दर्य लोकोत्तर हैं। वे साक्षात् प्रभु हैं उनके इस सौन्दर्य का दर्शन पूर्व–संचित पुण्यों से ही होता हैं।

1. सुजान रसखान – 264
2. वही – 01
3. वही – 16

''मोतिन माल बनी लट के लटकी लटवा लट घूँघरवारी।[1]
अंग ही अंग जराव लसै, अरू सीस लसै पगिया जरतारी।।
पूरव पून्यनि ते रसखानि, सु मोहिनी मूरति आनि निहारी।
चार्यो दिसानि की लै छवि, आनिकै झौके झरोखे में बाँके बिहारी।।''

रसखान की प्रिय रंग–स्थली कृष्ण का बाल–काल हैं। उन्होंने उसे भाव सौकुमार्यवश वरण किया हैं कृष्ण शैशव की कमनीय क्रांति ने उन्हें अत्यधिक रस–सिक्त किया है। अतः कृष्ण–जीवन के स्वर्णोदय प्रभात, उनके बाल–रूप, बाल–मनोविज्ञान, उनकी भावाकुल मृदुलता, मधुरिमा के चतुर्दिक चित्र हैं रसखान की कविता में। कृष्ण की विश्वमोहिनी बाल–छवि उनका धूल धूसरित तन, उनका औत्सुक्यि–प्रमुदित सहज सरलपन, उनके निराले विस्मय– विमुग्धकारी नयन, उनकी सुन्दर चोटी रसखान को बेहद प्रिय है।

''धूलि भरे अति सोभित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।[2]
खेलत खात फिरै अंगना, पग पैजनि बाजत पीरि कछौटी।।
वा छवि को रसखानि विलोकत, वारत काम कला निधि कोटी।
काग के भागे बड़े सजनी हरि हाथ सों लै गयौं माखन रोटी।।

1. सुजान रसखान सवैया 273
2. सुजान रसखान सवैया 18

कवि को शैशव के साथ ही कृष्ण का तारूण्य और किशोरावस्था भी प्रिय हैं। प्रेम–रस संसिक्त यौवन, स्वच्छद बिहा, आवर्जनाओं का अधिकरण, मधुमय ऋतु–प्रभाव, यौवन की मादकता उद्वाम आवेग, मद विहवल उन्माद और उल्लास तथा प्रेयसियों से छेड़–छाड़ की सुगढ़ तस्वीरें भी रसखान–काव्य में यत्र–तंत्र बिखरी पड़ी हैं। वस्तुतः तारूण्य बोध कवि के कामाध्यात्म का केन्द्र–बन्दु है। यही कारण हैं कि गोपियॉ कृष्ण–यौवन की लालसा में बेसुध रहती है। गोपियों का आकर्षण नैसर्गिक हैं और वह दैहिक तथा आध्यात्मिक क्षुधा तृधा की तुष्टि चाहता हैं। रसखान ने न केवल कृष्ण वरन् राधा के यौवन–लावण्य, उसके आंगिक रूप–सौन्दर्य तथा दोनों के परस्पर स्पर्श आलिंगन के अनेक चित्र उतारे है। कृष्ण की बक्रदृष्टिगत चेष्टाओं, उनके कटाक्षपात का, बांकी चाल का मनोहारी दृश्य कवि ने उपस्थित किया है, तथा–

''वह घेरनि धेनु अबेर सबेरनि फेरनि लाल लकुटृनि की।[1]
वह तीछन चच्छु कटाछन की छवि मोरनि भौंह भुकुटृनि की।।
वह लाल की चाल चुभी चित में रसखानि संगीत उघुटृनि की।
वह पीत पटक्कनि की चटकानि लिटक्कनि मौर मुकुटृनि की।।''

कवि ने कृष्ण–सौन्दर्य के साथ ही राधा के शारीरिक सौष्ठव, उसके नेत्र कपोल, मुख, अधर, चिबुक, नासिका आदि का वर्णन प्रायः परस्परित उपमानों से ही किया हैं। राधा की श्री–शोभा, उसकी हाव–भाव–हेला, उसका निखरता हुआ तारूण्य और कामोद्दीप्त हास–विलास का वर्णन भी रसखान ने पूर्ण मनोयोग से किया हैं। समग्रतः राधा का सौन्दर्य किसी तरह भी कवि का कुत्सित सौन्दर्य– बोध नहीं हैं। उसका लावण्य ललित लोल उमंग की तरह भावोत्तेजन और रससिक्त करने वाला हैं।

''अति लाल गुलालहु फूलतै फूल अली, अलि कुंतल राजत हैं।[2]
मुकता के कदंव के अंब के मौर सुने सुर कोकिल लाजत हैं।।

1. **सुजान रसखान सवैया 140**
2. **सुजान रसखान सवैया 238**

भखतूल समान के गुंज छरानन किंसकु की छवि छाजत हैं।

यह आन प्यारी जूकी रसखानि बसंत सी आजु बिराजत है।।

इसी सन्दर्भ में राधा–कृष्ण की प्रेम–केलि, उनके आर्लिगन–स्पर्श–बोध युक्त निम्न पंक्तियां भी दृष्टव्य हैं–

''लााड़िली काल लसैं लखिये अलि पूंजन कूंजन में छवि गाढ़ी।[1]
ऊजरी ज्यों बिजुरी सी जुरी चहुँ गूंजरी केलि कला सम काढ़ी।।
त्यों रसखान न जानि परै सुखमा तिहुँ लोकनि की अति बाढ़ी।
लालन बाल लिये बिहरैं छहरै सिर मोरपखी ठग ठाढ़ी।।''

कुल मिलाकर रसखान का कृष्ण–बाल–बोध, किशोर–किशोरी का तारूण्य बोध तद्विषयक सौन्दर्य–चित्रण अत्यंत रमणीय, भावमय एवं श्लाध्य हैं।

रसखान रस सिद्वि कवि हैं। उन्होंने अपने काव्य में रस–सृष्टि तो की हैं। किन्तु रस–तत्व पर कोई चिन्तन–मनन नहीं किया। इन्द्रियों द्वारा अनुभूत सौन्दर्य में रस सौन्दर्य की सृष्टि करने वाले रसखान रस के शास्त्रीय पक्ष से अनभिज्ञ हैं। उनके काव्य में श्रृंगार का पूर्ण परिपाक हुआ हैं। वस्तुतः रसानुभूति के मूल में सौन्दर्यनूभूति होती है। रसखान काव्य सौन्दर्यानुभूति की दूष्टि से उसी तरह महत्वपूर्ण हैं जिस प्रकार से घनानंद काव्य किन्तु सौन्दर्य और उसकी अनुभूति के अन्यान्य पहलूओं को रेखांकित करने वाले रसखान काव्य को रस (श्रृगार) के शास्त्रीय पहलूओं की दूष्टि से भी विश्लेषित किया जा सकता हैं।

श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग एवं वियोग) के अन्यान्य आयामों–रूप– सौन्दर्य, प्रेम–व्यापार अथवा सघन प्रेम प्रसंग तथा विप्रलम्भ श्रृंगार के चारों सोपान (पूर्वराग, मान, करूणा, प्रवास) आदि–का सुन्दर प्रस्तुतीकरण रसखान–काव्य में हुआ है। यथा–

''जाको लसै मुख चंद समान कमानी सौं भौंह गुमान हरै।[2]

1. सुजान रसखान सवैया 141
2. सुजान रसखान सवैया 218

दीरग नैन सरोजन तै मूग खंजन मीन की पांत डरै।

रसखान उरोज निहारत ही मुनि कौन समाधि न जाहि टरै।''

रसखान ने सौन्दर्य वर्णन की दृष्टि से नायक और नायिका दोनों की सम्मोहक छवियों को रेखांकित किया हैं। नटवर कृष्ण की सधन घुंघराली केश–राशि, गोचारण के समय की विमोहक कांति, मधुर वाणी, दृष्टि भंगिमा, चेष्टागत सौन्दर्य, वाके नयन, त्रिभंगी शरीर–मुद्रा वाणीगत माधुर्य आदि वर्णन के साथ ही कृष्ण सौन्दर्य के समग्र प्रभाव का रेखांकन भी कवि ने बड़े मनोयोग से किया हैं। कृष्ण के आंगिक सौन्दर्य का विलक्षण प्रभाव दृष्टव्य हैं।

''नैननि बंक विसाल के बाननि झेलि सकै अरू कौन नबेली।[1]
बेधत है हिय तीछन कोर सुमार गिरी तिय कोंटिक हेली।।
छोडैं नहीं छिनहूँ रसखानि सु लागी फिरै द्रुम से जनु बेली।
रीरि परी छवि की ब्रजमंडल कुंडल गंडनि कुंतल केली।।''

राधा की देहयष्टि उसके नेत्रों उसके शारीरिक गठन, उसकी चिबुक आदि के सौन्दर्य की चर्चा रसखान ने बराबर की है। शरीर पर चंदन का लेप किये हुए राधा की शोभा अतुलनीय हैं यथा–

''तन चन्द खौर के बैटी भटू रही आजु सुधा की सुता मनसी।[2]
मनौ इन्दु बधून लजावन की सूब भांतनि काढ़ि धरी गन–सी।।
रसखानि विराजति चौकी कुचौ बिच उत्तमताहि जरी तन सी।
दमकै दूग–वान के धायन कौं गिरि संत के संधि के जोवन सी।।''

राधा और गोपी–कृष्ण के प्रेम व्यापार का विस्तार से वर्णन रसखान काव्य में हुआ हैं। रसिक शिरोमणि का अनन्त लीला–व्यापार, उनके गहन प्रेम का परि चायक हैं। उनका कुंजों में, वृक्षों के नीचे रास्–करना, फाग खेलना आदि प्रेम कीड़ाएं संयोग श्रृंगार को पुष्ट एवं परिपक्व करने वाली है।

1. **सुजान रसखान सवैया 40**
2. **सुजान रसखान सवैया 142**

''अधर लगाइ रस प्याइ बाँसुरी बजाइ; मेरी नाम गाइ हाइ जादू कियौ मन मै।
रस रास सरस रंगीलो रसखान प्रानि, जान और जुगुति विलास कियों तन में।''

इसी प्रकार फाग वर्णन में संयोग के अभिनव चित्र दर्शनीय हैं।

''आवत लाल गुलाल लियैं मगसूने मिली इक नार नवीनी।[1]
त्यौं रसखानि लगाइ हियें भटू मौज कियौ मन माहिं अधीनी।।
सारी फटी सुकुमानि हटी अंगिया दरकी सरकी रस भीनी।
गाल गुलाल लगाइ कै अंक रिझाय बिदा करि दीनी।।''

इस तरह रसखान–काव्य में श्रृंगार के सम्भोग पक्ष के रूप–चित्र प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध होते हैं। रसखान आचार्य कवि नहीं, भावुक कवि हैं। अतः उनके काव्य में नायिका भेद–वर्णन का निर्वाह प्रायः नहीं हुआ हैं किन्तु प्रयास करने से कुछ उद्वरण खोंजे जा सकते हैं।'आगत पतिका' की मुरझाई देह बल्लरी प्रियतम आगमन के सुसंवाद से प्रमुदित गई हैं।

''नाह–वियोग बढ़्यौं रसखानि मलीन महा दुति देहतिया की।[2]
पंकज सौ मुख गौ मुरझाय लगीं लपटें बरि स्वांस हिया की।।
ऐसे में आवत कान्ह सुने हुलसै तरकींजु तनी अंगियाँ की।
योंजग जोति उठी तन की उसाइ दई मनौ बाती दिया की।।,

रसात्मक–सौन्दर्य के विप्रलम्भ–पक्ष की दृष्टि से रसखान का काव्य बड़ा विलक्षण है। वियोग काल की संचित मानस–छवियों को रूपायित करने में कवि पूर्णतः सिद्वहस्त है। रसखान पूर्वराग संबंधी सूक्ष्मातिसूक्ष्य उद्भावनाओं के धनी हैं। कृष्ण के नेह–स्नेह में निमग्न गोपियों की कल्पना प्रवण अनुभूतियां सविशेष मुखर हुई हैं।

1. सुजान रसखान सवैया : 120
2. वही : 105

यथा–

''उनही के सनेहन सानी रहैं उनहीं के जु नेह दिवानी रहैं।[1]
उनहीं की सुनैन औ बैन त्यौ सैन सौं चैन अनेकन ठानी रहैं।।
उनहीं संग डोलन मैं रसखानि सबै सुख सिन्धु अधानी रहै।
उनहीं बिन ज्यौं जलहीन ह्वै मीन आँखि मेरी अँसुवानी रहैं।।

रागात्मक संवेदनओं में मानिरी प्रिया का रूठना अत्यधिक स्पर्शी होता हैं। नायिका का मान संबंधी वर्णन भी रसखान ने रस–प्रेरित होकर किया है। यथा–

''प्रिय सों तुमि मान कर्यों कत नागरि आजु कहा किनहूँ सिख दीनी।

प्रयारा की विविध अनुभूतियों से रस–स्निग्ध है रसखान का काव्य मदन–दहन जैसा प्रवास काल में होता हैं वैसा पूर्वराग में कहां? रसखान की कविता में प्रवास की टीस और तज्जन्य प्रकल्पनाएं बड़ी ह्रदयस्पर्शी बन पड़ी हैं। यथा–

''मग हेरत धूँधरे नैन भये रसना रट वा गुन गावन की।[2]
अंगुरी गनि हार थकी सजनी सगुनौती चलै नहिं पावन की।।
पथिकौ कोउ ऐसो जु नाहिं कहै सुधि है रसखानि कै आवन की।
मन भावन आवन सावन में कही औधि करी डग बावन की।।''

सम्प्रतः रसखान का रस–सौन्दर्य उनकी आंतर अनुभूतियों और मूल संवेदनाओं से सम्पन्न हैं। कवि की रागात्मक चेतना उसकी आत्मिक सौन्दर्यानुभूति, उसकी रस–चर्वणा सर्जनात्मक शक्ति के सहारे प्रतिच्छवित हुई है। रसखान रस–धर्मी सोंन्दर्यदर्शी हैं। उनका श्रृंगार वर्णन भावक और भावुक दोनों के लिए आस्वाद्य हैं, अस्तु वह रसमयी है।

1. सुजान रसखान, सवैया 30
2. वही 231

शिल्प वैशिष्ट्य

भारतीय संस्कृति में 'शिल्प' को सौन्दर्य भावना का मूल संस्कर्ता और चित्र, मूर्ति, नृत्य, गीत, याद्य (संगीत) आदि कलाओं का समाहर्ता माना गया हैं। वस्तुतः शिल्प प्रतिरूपात्मक अनुकृति अथवा विधायनी वृत्ति हैं और कलाओं और काव्य का अभिन्न अंग है।

मध्यकालीन कवि काव्य (अथवा काव्यकला) के अतिरिक्त अन्य ललित कलाओं के प्रति उतने सचेष्ट नहीं थे। वे काव्य के प्रति ही अधिक अनुरक्त हैं। उनके लिए कविता ही जीवन–सौन्दर्य की विधायिनी है। अतः वे काव्य के प्रति 1. डॉ0 जगदीश गुप्तः वैदिक साहित्य में शिल्प का स्वरूपः भारतीय कला के पदचिह्न, पृष्ठ 80 आकृष्ट है। उनके लिए काव्य–शिल्प और भाव में अपार्थक्य हैं। दोनों 'गिरा अरथ जल बीचि सम' अभिन्न हैं। इस संदर्भ में रसखान की काव्य–भाषा, शब्द–शिल्प, अभिव्यंजना कौशल, अलंकार–विधान और छंदाबैध पर विमर्श अपेक्षित हैं।

रसखान की कविता की महत्वपूर्ण शिल्पगत विशेषता निरलंकृति हैं। अलंकारों का प्रयोग रसखान–काव्य में हुआ है किन्तु अत्यल्प प्रेम की दृढ़ता अनन्यता, ह्रदय वेधक, सरलता तथा अनुभूति और स्पंदन की चरमावस्था में रसखान के पास अलंकार–प्रयोग का उतना अवकाश ही नहीं रहा है। वैसे भी रसखान रससिद्व कवि है, शास्त्रज्ञ काव्यशास्त्री कवि नहीं। फिर भी रसखान के काव्य मे यमक श्लेष तथा उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास आदि के उदाहरण ढूँढ़े जा सकते हैं।

यम–यमक एक ही शब्द की भिन्न अर्थ में दोबार आवृत्ति 'यमक' में होती हैं। ''बैन वही उनको गुन गाइ और कान वहीं उन बैन सों सानी।'' त्यौ

1. सुंजान रसखान – सवैया 129

रसखानि वही रसखानि जू हैं रसखानि सों हैं रसखानि।'' यहाँ भिन्न अर्थ में [1]'रसखानि' शब्द की आवृत्ति हैं। उपमा– अर्थालंकारों मे उपमा का प्रयोग अनायास ही बन पड़ता हैं। उपमा के अनायास प्रयोग रसखान–काव्य में भी हुए है, यथा–

'तिरसी बरछी सम मारत हैं दृग बान कमान सूजान लग्यो' [1]

जाकौ लसै मुख चन्द समान सुकोमल अंगनि रूप लपेटी।'

'चंद सौ आनन मैन मनोहर बैन मनोहर मोहत हौं मन।।'

रूपक– रसखान की कविता में 'सांगरूपक' अथवा 'सावयव रूपक' के प्रयोग अपेक्षाकृत कम हैं और निरावयव रूपक के प्रयोग प्रचुर। सांगरूपक का एक सुन्दर उदाहरण दृष्टव्य है, जहां कृष्णागमन पर वर्षा ऋतु का आरोप है।

''दमकै रबि कुंडल दामिनी से धुरवा जिपि गोरछ छाजत है।[2]

मुकताहल–बारन गोपन के सुतौ बूँदन की छबि छाजत हैं।।

ब्रजबाल नदी उमहर रसखानि मयंक बधू दुति लाजत हैं।

यह आवन श्री मनभावन की बरषा जिमि आज विराजत हैं।।''

उत्प्रेक्षा– उत्प्रेक्षा के सुष्ठु प्रयोग भी रसखान ने यदा कदा किये हैं। एक सुन्दर उदाहरण दृष्टव्य हैं–

'रसखानि सुन्यो हैं वियोग के ताप मलीन महा दुति देह तिया की।[3]

चन्द्रमुखी तन गो मुरझाय लगी लपटै बिस स्वांस हिया की।।

ऐते मैं आवत कन्हाई के हुलसे सरके तरकी अंगियां की।

यों जग जोति उठी तन की उकसाइ दई मनौ बाती दिया की।।'

1. रसखान रचनावली , पृष्ठ 144, डॉ0 विद्यानिवास द्वारा उद्धुत।
2. सुजान रसखान सवैया, पृष्ठ 166
3. वही पृष्ठ 100

विरोधाभास– अपने कथन को विरोधी उक्तियों द्वारा प्रस्तुत करने में भी रसखान प्रवीण हैं एक सुष्ठु उदाहरण दृष्टव्य है–

'संकर से सुर जाहि जपै चतुरानन ध्यानन धर्म बढ़ावै।'

जापर देव अदेव भू अंगना वारत प्रानन प्रानन पावैं।'

अर्थात कृष्ण ऐसे प्रभु हैं जिनके लिए प्राणो का उत्सर्ग करने पर सच्चे अर्थो में जीवन (प्राणों) की प्राप्ति होती है। 'सुजान रसखान' में कहीं–कहीं अतिशयोक्ति; उल्लेख तथा व्यतिरेक आदि अलंकारों के भी एक दो प्रयोग हुए है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि रसखान अलंकार–प्रिय कवि है। अथवा उन्होंनं अलंकारों का वैसा साधिकार और विस्तृत प्रयोग किया हैं। जैसा सूर–तुलसी जैसे भक्त कवियों या बिहारी और धनानन्द जैसे रीतिकालीन कवियो ने किया है।

शब्द–सम्पदा, अर्थ–गौरव, भाव–गरिमा, प्रांजलता, सम्प्रेषण–शक्ति और भावभिव्यंजना की दृष्टि से रसखान–काव्य गुणात्मक एवं विशिष्ट हैं। यद्यपि रसखान घनानंद की भॉति ब्रज–भाषा प्रवीण और बिहारी की भाँति ब्रजभाषा –पंडित नहीं हैं तथापि उनकी ब्रजभाषा की अपनी विशेषता हैं और वह हैं उसका ग्राम्यसंस्कार, उसकी निलंकृति और सरलता। सहज और सरल भाषा अर्थात् चिरपरिचित शब्दावली का मार्दवयुक्त प्रयोग वे ही रचनाकार कर पाते हैं जिनका सम्बल निष्ठा हैं निष्ठा शब्दाडम्बर में नहीं होती कहना न होगा कि रसखान ऐसे ही निष्ठावान कवि हैं।[1]

वस्तुतः रचनाकार के शब्द–चयन और छन्द–विधान पर समकालीन रचना– धर्मिता ओर सर्जनात्मक प्रवृतियों का गहरा प्रभाव पड़ता हैं। संवेदना का सांचा समकालीन रचनात्मक प्रवृत्तियॉ निर्मित करती है। निश्चय हर इसमें व्यक्ति रचनाकार की वैयक्तिक विशेषताएं सक्रिय भूमिका अदा करती हैं रसखान

1. सुजान रसखान सवैया, 32
2. सं0 डॉ0 विद्या निवास मिश्र : रसखान रचनावली, पृष्ठ 145।

के शिल्प संस्कार का उस भक्त–कवियों की निष्ठा और सहज–स्वाभाविक भाषा–प्रवाह से है। गहन प्रेम की अभिव्यक्ति अलंकृत हो भी सकती। अलंकृति के नाम पर रसखान अनुप्रास के ही प्रेमी ठहरायें जा सकते है। अन्य भक्त कवियों की भांति ही दोहा, कवित और सवैया छन्द उन्हें प्रिय है।

रसखान काव्य की रमणीयता उसका विशिष्ट सौन्दर्य, उसकी भावविह्वल वाग्धारा और सहज–सरल शब्द–योजना मुक्त वाक्य–प्रवाह ध्वनि सामंजस्य मे ंनिहित है। यथा–

रसखानि सुन्यो है वियोग के ताप मलीन महादुति देहतिया की।[1]

चन्द्रमुखी तनगो मुरझाई लगी लपटै विस स्वास हिया की।।

''कहा कहूँ आली कछू कहती बनै न दसा,

नंद जी के अंगना में कौतुक देख्यो मैं।

जगत के ठाटी महापुरूष विराटी जो निरंजन,

निराटी ताहि माटी खात देख्यों मैं।।

'' भाव–प्रवणता, ध्वनिमूलक शब्द–चयन और भाषागत प्रवाह की दृष्टि से रसखान काव्य अत्यधिक चिताकर्षक हैं। यथा–

''दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं लट आनन पैं लहराइ रहीं।[2]

छवि छैल छवीली छटा लहराइ कै कौतुक कोटि दिखाइ रहीं।।

झूकि–झूकि झमाकनि चूम अमी चहिं चाँदनी चन्द चुराइ रहीं।

पन पाइ रही रसखानि महा छवि मोहन की तरसाइ रही।।''

समग्रतः यह कहा जा सकता हैं कि रसखान का शब्द–चयन, शब्द–विन्यास और प्रसंगानुकूल शब्द–प्रयोग भावाभिव्यंजक तथा अत्यधिक प्रभावोत्पादक हैं। उनकी भाषा अनुप्रासों से युक्त, प्रसाद और माधुर्य गुणों से आप्लावित सतत प्रवाह–शील, रस–पोषिका और भावानुवर्तिनी शुद्ध ब्रजभाषा हैं।

1. सुजान रसखान : पृ0 100।

2. वही पृ0 132।

तृतीय–अध्याय

सन्दर्भ–ग्रन्थ

पृष्टः–123, रामधारी सिंह 'संस्कृति के चार अध्याय पृ0 355

वही पृ0 354

नारद भक्ति सूत्र–पृ0 3 (गीता–प्रेस–गोरखपुर)

पृष्टः–124, सं0 विद्याविास मिश्रः रसखान रचनावली पृ0 26,

पृष्टः–126, दौ सौ बावन वैष्णवन की वार्ता पृ0 219,

पोदृार अभिनन्दन ग्रन्थ, भक्त कवि रसखान पृ0 305,

शिवसिंह सरोज पृ0 439,

मिश्रबंधु, प्रथम भाग पृ0 392,

पृष्टः–127, हिन्दी के मुसलमान कवियों का प्रेम–काव्य पृ0 79,

रसखान पदावली, संकलन प्रभुक्त ब्रहम्रचारी पृ0 7,

हिन्दी–साहित्य का प्रथम इतिहास पृ0 107,

हिन्दी–साहित्य का इतिहास पृ0 106,

पृष्टः–128, पोदृार–अभिनन्दन ग्रन्थ, प्रधान सम्पादक वासुदेवशरण अग्रवाल पृ0 315

रसखान–जीवन और कृतित्व पृ0 48,

पृष्टः–129, प्रेम–वाटिका,

रसखान : जीवन और कृतित्व पृ0 40,

रसखान और उनका काव्य पृ0 2,

पृष्टः–131, मूल गोसाई चरित, बाबा वेषी माधव दास, मिश्र बन्धु आदि।

देखि गदर हित साहिबी –प्रेम वाटिका, दोहा 48,

वाक्यात् दारूल हुकूमत देहली पृ0 308 से 319 तक,

रसखान : जीवन और कृतित्व पृ0 48,

पृष्टः–132, पोदृार अभिनन्दन ग्रन्थ पृ0 315,

रसखान : काव्य तथा भक्ति भावना पृ0 32,

प्रेम–वाटिका 48–49

आचार्य विट्ठलनाथ प्रसाद मिश्र, रसखान ग्रन्थावली की भूमिका पृ0 27,

आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, मध्ययुगीन प्रेम साधना पृ0 148;

आचार्य चन्द्रवली पाण्डेय आदि।

पृष्टः—133, पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ पृ0 314,

वाकयाते दारूल हुकूमत देहली पृ0 311—319,

प्रेम—वाटिका; 48,

पृष्टः—134, रसखान (ग्रन्थावली),प्रस्तावना, आचार्यविश्वानाथप्रसाद मिश्र पृ0 24

रसखानः काव्य तथा भक्ति भावना डॉ0 माजदा असद पृ0 33,

उपरिवत् पृ0 32,

हिन्दी साहित्य पृ0 205,

रसखानः काव्य तथा भक्ति भावना पृ0 34—35,

पृष्टः—140, प्रेम—वाटिका—दोहा —1

वही —10

वही —06

वही —24,

पृष्टः—141, वही —2

वही —12

वही —18,

पृष्टः—142, सुजान रसखान—सवैया—10

वही —13

वही —22

वही —260,

पृष्टः—143, वही —225

वही —100

वही —226

सुजान रसखान—सवैया—,

पृष्टः—144,	वही	दोहा—264
	वही	सवैया—18,
पृष्टः—145,	वही	सवैया—62
	वही	सवैया—125
	वही	सवैया—41
	वही	सवैया—32,
पृष्टः—146,	वही	कमित्र—64,
पृष्टः—147,	वही	सवैया—1
	वही	सवैया—16
	वही	सवैया—273,
पृष्टः—148,	वही	सवैया—18,
	वही	सवैया—140
	वही	सवैया—238,
पृष्टः—149,	वही	सवैया—141
	वही	सवैया—218,
पृष्टः—150,	वही	सवैया—40
	सुजान रसखान—	कविन्त—54
	सुजान रसखान—	सवैया—120,
पृष्टः—151,	वही	सवैया—30
	वही	सवैया—231,
पृष्टः—152,	वही	सवैया—129
	वही	सवैया—166
	वही	सवैया—100,
पृष्टः—153,	वही	सवैया—32,
पृष्टः—154,	वही	सवैया—132,